सुरसती

(तिमाही)

(भोजपुरी भासा आउर साहित्य के तात्त्विक,
पुरातात्त्विक रूप से भरल)

●●

इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरा संसारं न दीप्यते ।।

ई भासा ना रहित त तीनों लोक में अन्हरिया छा जाइत।
दंडी (काव्यादर्श १-४)

संपादक : डॉ० नन्द किशोर तिवारी

रोहतास जिला भोजपुरी परिषद् के मुख-पत्र
बिराटा साहित्य मन्दिर, सहसराम, रोहतास (बिहार)

विषयानुक्रम

सम्पादकीय –	अब न आँखतर आवत कोऊ	3–4
अध्यातम –	मन के एकागरता – स्वामी शिवानंद जी 'तीर्थ'	5
व्याकरन –	भोजपुरी के क्रियापद – स्व. सहृदय जी	6
कहनी –	स्वप्नवासवदत्ता (भोजपुरी में) नकिति	7–9
कहानी –	ललसा – विद्यार्थी	10–11
नाटक –	पाषाणी – नकिति	11–13
आलेख –	आजादी के बाद भारतीय मेहरारू – नकिति	14–16

कविता

लिरिक –	(वेद के) देवकुमार मिश्र 'अलमस्त'	16–17
दोहा –	डॉ. विश्वंभरनाथ पाण्डेय	17–18
ऊ पहर –	'कमल'	18–19
गजल –	दिनेश गार्ग्य	19–20
चीठी –	मनमौजी	20
सार के दोहा –	बरमेश्वर सिंह	21
गीत –	फंदोत्तीर्णानंद जी	21–22
नवगीत –	अरुण	23–24
भँवर गीत –	आसिफ रोहतासवी	24

लघु कथा

कल्यान कइसे होई –	जय बहादुर सिंह	25
डंडे के डंडी –	नकिति	26–30
हम मनेजर के बेटा हईं –	जय बहादुर सिंह,	31
चीठी पतरी –	शंभुशरण सिन्हा, प्रभाकर, विश्वंभर नाथ पांडेय।	31–32

रोहतास जिला भोजपुरी साहित्य परिषद के मुख–पत्र मूल्य – 15/- रु.

निराला साहित्य मंदिर, सहसराम, रोहतास (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

अब न आँखतर आवत कोऊ

पं. विद्यानिवास मिसिर जी भोजपुरी भासा के बहुते बड़ हिमायती रहीं। एह भासा आ संस्कृति के कुल्ही मरम के उहाँ के जानत, पहिचानत रहीं आ ओकर अतमा उहाँ के भीतर बसत रहे। अतना बड़ा संसकिरित, हिन्दी आ अँगरेजी के विद्वान रहला पर भी उहाँ के मातृभासा के महत्व देलीं, परेम कइलीं। अइसन अग्रसोची, सहृदय पुरुस, अब कहवाँ भेटइहें? मातृभासा में कतना गइराई बा, कतना बड़ा सोच के संपदा छिपल बा, कतना भीतर जा के एकरा आग के उठकेर के धधकावलल जा सकेला, उहाँ के, का हिन्दी, का भोजपुरी में लिखिके-लिखवा के बढ़ियाँ से दरसवलीं। हिन्दी में उहाँ के ललित निबंध होखे, चाहे भासाविग्यान सभ रचनन में भोजपुरी माटी के सरवगंधी सुगंध सुवासित कइले बा। भोजपुरी सबद संपदा के कुबेरी-कोस के दरवाजा पहिले पहिल उहें के खोल के एगो ओकर झलक सभका के देलीं। राहुल जी जइसन महापंडित के साथे रहला से उहाँ के औचके विरासत में ई सभी चीज भेंटा गइल रहे। माई के भासा से परेम होखे त मिसिर जी लेखा। घर में मित्रन से, शिष्यन से, परिवार आ कुटुम में उहाँ के एही मिठ-भासा के व्यौहार करत रहीं। कवनो भोजपुरी के कवि सुनावे खातिर समय माँगस त उहाँ के सभ काम छोड़ि के समय देत रहीं। एक बेरी हमरा उहाँ के बनारस के बदशाह बाग के निवास पर जाए के मोका मिलल। देखत बानीं कि बावला जी के भोजपुरी में काव्य-पाठ हो रहल बा। पंडित जी गँभीर होके सुन रहल बानीं। बावला जी से हम पहिले से परिचित रहीं। ई जनला पर हम उहाँ के बिसेस किरिपा अचके पा गइलीं। जब 'कुंजन रामायन' के संपादन कइके प्रकासित करवलीं त एकर भूमिका पंडित जी लिखलीं। मन से सुनलीं आ सरहलीं।

उहाँ के का देस, का बिदेस सभ जगहा के भोजपुरियन से जुड़ल रहीं। मारीशस, फीजी, अमेरिका, ब्रिटेन के छोटहनो संस्था होखे चाहें बिहार, यू. पी. के बड़हन कवनो भोजपुरी संस्था, बिना उहाँ के नावँ के ओकर सोभा बनते ना रहे। पटना, बलिया, आरा, ससरॉव के कवनो पत्रिका बिना उहाँ के नावँ के देले छपत ना देखल गइल। ओकरा गरिमा के राछा खातिर ऊ नावँ 'श्री गणेशाय नमः' जइसन पहिला आदर के जोग रहे। ओह नावँ के असर से संस्था चाहे पत्रिका के सिंगार अपने आप हो जात रहे। जइसे पूरा बरात में दुलहा बिना सभे फीका पड़ जाला। घर में अनाज रहते चूल्हा बिना भोजन बने के कवनो बीध ना लउके, ओइसहीं भोजपुरी भासा खातिर पंडित जी के व्यक्तित्व रहे। उहाँ के नावँ दे देला से सभ परिपूरन काम हो जात रहे। नावँ आउर नामी के ई सम्बन्ध जवन गोसाईं जी बतवले बानीं, ऊ बेलकुल उहाँ के जीवन आउर नावँ में देखात रहे। खाँटी भोजपुरिहा के लूर लच्छन से उहाँ के भरपूर रहीं। उहाँ के आचार-विचार पर पच्छिम कबो हावी ना भइल। आपन देस, ओकर गाँव, ओकर संस्कृति उहाँ के भीतर बसि गइल रहे। उहाँ के लोकभासा के सरीर के तुलना सेसनाग से कइले बानीं। जइसे समूचा पृथिवी सेसनाग पर बा ओइसही पूरा भासा आ संस्कृति के नेवँ में लोक भासा बिआ। इहाँ के पहिले, एह भाव के, हजारी प्रसाद जी आ राहुल जी समुझले रहीं जा, पंडित जी एह काम के आँगा बढ़वलीं। उहाँ के सोच कतना दूर के रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी के कुल्ही अनुभव एके साथे एक भासा में सँजोवल बा। एकर सबद, एकर मुहावरा, एकर लोकोक्ति सभ हमरा के एके साथे मिल जात बा। कवनो मेलावट ना कवनो गोलावट ना। उहाँ के कबो व्याख्या करीं, कबो मूल्यांकन आ कबो एह लोक से वेद के दरसन कराईं। सभ रचनन के केन्द्र में लोके बा। ओही में बेद के सरूप छिपल बा। लोक भासा खाली गँवारे मन के उपज ना ह, विद्वानों एहीं में पहिले सोचेलन। वाचिक भोजपुरी के उदाहरन देके ओकर बड़े गो भूमिका लिखलीं। कई गो पद के अपूर्व व्याख्या कइलीं। दिनमान में भोजपुरी 'सबद संपदा' के स्तंभ लिखलीं। एह भासा के पर्यायन के मरम-धरम बतवलीं। 'नवभारत टाइम्स' के संपादन करत खानी संपादकीय स्तंभ पर प्रफुल्लचंद ओझा 'मुक्त' जी के भोजपुरी में टिप्पनी' आ सुतंत्र लेख छपलीं। अतना करूआ, अतना अँखिगर, अतना परपराए वाला, टिपनी सायदे कवनो दैनिक पत्र दे सकत रहे। ई कुल्ही एगो प्रदेस के एगो, सरकार के, मुखमंत्री के विरोध में लिखात रहे। उनुकर तानासाही के विरोध, भोजपुरी भासी के विरोध, उनुका तंत्र के विरोध, उनुका भासा आ गिरल नैतिकता के विरोध, उहाँ के खुलि के कइलीं। ई रहे संपादक के निर्भीक तेवर। उहाँ के केहू के गुन के तुरंत पकड़ लेत रहीं आ ओकरा के फट से उजागर कर देत रहीं। उहाँ के गेआन खातिर खोज बराबर होत रहे। कतहीं आवे-जाए में आलस ना रहे। एकरा के उहाँ के 'लोक संग्रह' नावँ देले रहीं। बहुते अनासक्ति पूर्वक ई काम जीवनभर संपादित होत रहल। जे कोई हिन्दी-संसकिरित के विद्वान भोजपुरी भासा में काम करत रहे ओकरा के उहाँ के मुक्त भाव से सराहना के पात्र मानत रहीं। हवलदार त्रिपाठी जी के भोजपुरी मेघदूत आ नदियन प जवन उहाँ के काम कइले बानीं, ऊ सभ उहाँ के बड़ा प्रीत रहे। भोजपुरी अकादमी के परकासन के भी प्रसंसा करत रहीं, दिसा देखावत रहीं। कुंजन जी, बावला जी के भासा उहाँ के खूबी रुचत-पचत रहे। जब हम भास के नाटकन के भोजपुरी अनुवाद देखवलीं त उहाँ के खूबी असिरबाद देलीं। गँभीर हो के कहलीं-अइसहीं भोजपुरी के महान् साहित्य से भँडार भर देवे के बा। अतना गेआन आ कतना अपना मातृभासा के ओरे धेआन रहे। कतना उछाह रहे, ओकर बढ़ती सुनिके। उहाँ के शोधकर्त्ता लोगिन के भोजपुरी क्षेत्र में काम करे खातिर विषय सुझावत रहीं, काम करावत रहीं। अचके राह में चलत, राही लोगन के रहता देखावत, देस के अतना बड़ा सेवक एक पल में आपन आँखि मूँद लेलस। देवी सुरसती! अपना अइसन सेवकन के कबो-कबो धरती पर भेजेलू। अतना जलदी का रहे।

सांस्कृतिक विषयन पर, धरम, दर्शन, तंत्र पर, भाषाशास्त्र पर लोक साहित्य पर बइठा के, बोल के, लिखवाए वाला विद्वान अब एह जुग में कोई लउकी ना। अपना अध्ययन, चिंतन के रात-दिन माँजे वाला अइसन विद्वान के दरसन अब कतना दिन के बाद एह लोक में होई, कहल ना जा सके। अपना से छोट के अतना पेआर देवे वाला देव पुरुस अब कहवाँ धरती पर मिलिहन ? अपना नाँव के सार्थक करे वाला, विद्या के तेजपुंज के हमार हजारन परनाम। सभ भोजपुरी के लेखक, नेही-छोही सेवकन के ओर से उहाँ के परनाम।

❁ ❁

www.bhojpurisahityangan.com

अध्यातम

मन के एकागर कइला से जीवन सारथक हो जाई

स्वामी शिवानन्द जी 'तीर्थ'

परम प्रभु परमतमा के अनन्त विभूतियन में से ई मानुस शरीर भी एगो अदभुद कलाकृति बा। एकर हरास आ विकास सरवन-मनन, पठन-पाठन पर निरभर बा! ई अपना आप में अनुपम बा। ई न आछा बा ना बुरे बा। बुरा चिंतन कइला से बुरा कहाला आउर ऊतम आचार-बिचार आउर आछा चिंतन से ऊ आछा कहाला। क्रिया के उपाधि त अपने आप मिल जाला। ओकरा खातिर जचना ना करे के परे। जइसे गरीब से गरीब घर के लइकी के सादी अगर कवनो राजा से हो जाय त ओकरा के अपने आप रानी के उपाधि मिल जाला। पंडित के मेहरारू पंडिताइन कहाली। भले ऊ अनपढ़ होखस। पति जी से भी एह उपाधि खातिर उनका जचना ना करे के परे। एही तरह से दुराचार करे वाला के दुराचारी आउर सदाचार करे वाला के सदाचारी के उपाधि अपनही मिल जाला।

डाक्टर कवनो दोसर मानुस ना होखे। डाक्टरी के कला में अपना तन-मन-वचन के मशगूल कइके ऊ अपना के एह जोग्यता से विभूषित क ले ला। एही तरह से साधू के साथे ओकर सधना जुड़ल बा। जेकरा सांती मिल गइल ऊ संत ह। आतम ग्यान हो गइल त महतमा। खोज के काम पूरा हो गइल त रिखी, आ मन राग-द्वेष से मुकुत हो जाय त मुनी। सृष्टी में भौतिक कला के गिनती ना हो सके। लेकिन ओकरा केन्द्र में अध्यातम परम कला बा, जेकरा बिना अदिमी कुल्ही भौतिक कला में निपुन होखलो पर खोखला रहेला, कला से सजल-बजल रहलो पर लजाइल रहेला। सरीर के सभ अंगन के बिस्तार भौतिक ह, ओकरा के संचेतन रखे वाला अहथान अन्तरात्मा ह। सरीर अवस्था के अनुसार होला, बढ़त रहेला घटत रहेला, मोटात रहेला, छीजत रहेला, एहसे ओकरा से सम्बन्धित कला भी अवस्था के अनुसार आपन रूप धरत रहेला। पसु के नाँव पास में, जेवर में, बन्हला के चलते होला। जे बन्हाइल होखे। पच्छी पाँख के चलते उड़ेलन। एह से उनुकर नावँ अइसन बा। लेकिन मानुस मनन परधान जीव हवन। ऊ विचार-विमर्श कइके, अपना तन, मन, वचन आ हृदया के अन्तर्मुख कइके निस्पच्छ होके अनुभव कर सकेला कि ऊ कवना चीझ से बँधल नइखे। कुल्ही सृष्टी के चीझ मानुस के अपेक्षा जड़ बा। ओकर सदुपयोग आ दुरूपयोग मनुसे पर निरभर बा। हथिआर जइसे जड़ होला ओकरा उपजोगे पर ओकर आछा-बुरा होखल निरभर होला। लइका के चक्कू दे दीहीं, ऊ आपन अँगुरी काट ली ही। लेकिन समुझ वाला अदिमी ओकरा से तरकारी काटी। अइसहीं सरीर रूपी हथिआर के सदुपयोग मानुस जात के करतब ह। घर फूटी त गँवार लूटी, गाँव फूटी त जवार लूटी। मन फूटी त अविदेआ लूटी, एह से मन के एकागर करीं। जीवन सारथक हो जाई।

– नकिति

☆☆☆

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के क्रियापद

स्व. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

1. अगर अंग+अड्–अँगड़। अगराता हि. हृदय से प्रसन्न हो रहा है। (पा. गृ–निगरणे अतिशयेन गति।

2. अँगार (दाहे) अँगरऽता। हि. जलन के साथ अंग का गलना+सड़ना।

(सं.–पा.–आगि–गतौ; उणादि आरन् प्रत्यय=अङ्गराः)

3. अँगेछ (स्वीकरणे–अङ्गकरणेच)। अँगेच्छऽता। हि. स्वीकार इषेर्भावे। स्वीकार कर रहा है। (सं. पा.–इष–इच्छायामः इषेर्भावे शौ यगभावश्य निपात्यते–इच्छ (3/3/31)

4. अँगेज (अङीकरणे–सहचे च) – अँगेजऽता। हि.–बरदाश्त कर रहा है। (सं.पा. – ईज–गति–कुत्सनयोः। अंग+ईज=अँगेज)।

5. अँचव (आचमने–शुद्धिकरणे च) – अँचवऽताहि. भोजन के बाद मुँह साफ कर रहा है। (सं. पा.– आ उपसर्ग–चमु–अपने अन–प्रत्यय=आचमन–अँचवन।

6. अँटक (द्रनिगिलने) – अँटकऽता। हि. अँड़सना। (सं.पा.–अट–पट गतौ। भोजपुरी प्रकृति के अनुसार अनुनासिक का प्रत्यय।

7. अँठिल–अँठुल = (अस्विवत् दृढी करणे)– अँठिलाता, अँठुलाता। हि. गुठली पड़ रहा है। (सं. पा. = अठि – गतौ = आम आँठी अँठिल। फिर पा. स्थूल – परिवृंहणे से उल। आम–ढुल (अठुल = अँठुलाता।)

8. अड़क (मदे) – अकड़ऽता। शेष उपरिवत्। स्वार्थे कः

9. अड़ (मदे) – अड़ऽता। हि. लड़ने में उतरता नहीं; बल्कि अह– अतिक्रम हिंसनयोः। अड़ जाता है। (सं.पा. – अड्ड – उधमे। कड – मदेऽ कस्य प्राकृतवत् 'अ' रूपः।)

10. अँड़च (उत्साहे प्रसन्ने च) – अँड़चऽता। हि. भोजन तथा शरीर मद से प्रसन्न हो रहा है।

11. अँड़स (अड़+कस) – अँड़सऽता। हि. (छिद्र में अँड़स गया) (सं. पा. अड्ड–कस। अड–मदे और कस– गतिशासनयोः। अड़कस–अँड़स। लस– श्लेषण क्रीडनयोः। श्लेषणम्–संधि।)

12. अंदक (भय निवारणे) – अदँकऽता। हि. निडर रहता है। (सं. पा. न दण्डं चिन्तयति अदंड–अदंका–अंदंका। दण्ड दण्निपाते – दण्डयति।)

13. अँवट (छनी–भूते)– अँवटऽता, अँवटाता। हि. दूध आग पर गाढ़ा कर रहा है। अथवा हो रहा है। (सं. पा. = अम–रोगे–से अमंत्रित – आम – आँव (रोगे) – आँवा = कुम्हार का भट्ठा। वट – संधाने – वट – अम – वट अवैया वस्तु)

★ ★ ★

www.bhojpurisahityangan.com

स्वप्नवासवदत्ता

संसकिरित भासा के अद्‌भुत कहानी

नकिति

जब राजकुमारी पद्मावती अपना सभ परिजनन के साथे आस्रम में चल गइली तब पाछे-पाछे परिव्राजक के भेख में जौगंधरायण भी अपना साथे वासवदत्ता के लेले अन्दर पहुँचलन। ओहिजा कुटिया में तपस्विनी बइठल रही। पद्मावती पहुँचते आदरपूर्वक उनुका प्रनाम करइली। तपस्विनी भी प्रेम से आसीरवाद देली, स्वागत कइली आ उन्हुका से आसन पर बइठे के कहली। पद्मावती के सुन्दर रूप आ सज्जनोचित व्यवहार देखिके वासवदत्ता उन्हुका पर मुगुध हो गइली आउर मने-मन उनुका गुन के प्रसंसा करे लगली। एने-ओने के कुछ बात कइला प तपस्विनी पद्मावती के दासी से पुछली-का भद्रे ! राजकुमारी के अवहिन ले कवनो राजा के साथे विआह निश्चित ना भइल ? दासी कहलस कि अवहिन निश्चित त ना भइल ह लेकिन उज्जैन के महराज दूत भेजिके अपना राजकुमार के साथे बिआह करे के ईछा परगट कइले बाड़न। वासवदत्ता ई सुनि के मने-मन बहुते प्रसन्न भइली कि इनिका साथे हमार कवनो तरह आत्मीयता त बा। दासी के उत्तर सुनिके तपस्विनी बहुत संतोख परगट कइली आउर कहली कि दूनो कुल महान् बा। जदि सम्बन्ध हो जाय त बहुते आछा बा।

अतने में पद्मावती अपना कंचुकी से कहली कि हम आस्रम में रहे वाला लोग के कुछ सेवा कइल चाहतानी। तूँ ओह लोग से पूछ कि ऊ लोग ओकरा के ग्रहन करिहन जा। राजकुमारी के आग्याँ से कंचुकी बहरी निकलिके जोर-जोर से कहे लागल-हे आस्रमवासी तपस्वी लोग। मगध के राजकुमारी पद्मावती सरधा आ भगती से धरम खातिर रउआ सभे के कुछ सेवा कइल चाहत बाड़ी। जदि कवनो तपस्वी के घरे चाहें परिवार के जरूरत होखे चाहें कवनो शिष्य के गुरुदछिना देबे खातिर द्रव्य के जरूरत होखे चाहें केहू के अउरी कवनो बात इष्ट होखे त ओकरा जरूरत के पूर्त्ती कइके राजकुमारी कृतारथ आ संतुष्ट होखल चाहत बाड़ी।

आस्रमवासियन के त कवनो बात के जरूरते ना रहे, एहसे कोई जाचक राजकुमारी के समने अइबे ना कइल। लेकिन जौगन्धरायन सोंचलन कि राजकुमारी के सेवा में जाए खातिर सभ से आछा अवसर ईहे बा। ऊ हाजिर भइलन आ विनीत भाव से निवेदन कइलन कि हम एगो अरथी (जाँचक) के रूप में उपस्थित बानीं। तपस्विनी सोचली कि एह आस्रम के सभ लोग त संतुष्ट बइले बा लेकिन ई कवनो आगंतुक बुझाता। पद्मावती कहली कि जे हो, चल इनके अइला से हमार एह आस्रम में आइल सफल हो गइल। कंचुकी, जौगंधरायन से पुछलस-रउआ के का चाहीं ? जौगंधरायन कहलन कि हमरा अउरी कुछ ना चाही। हमार एगुड़े निवेदन बा। बासवदत्ता के ओरे इसारा कइके कहलन कि ई हमार बहिन हई। इनिकर स्वामी बिदेस गइल बाड़न। हमार परथना बा कि राजकुमारी कुछ दिन खातिर इनिका प्रतिपालन के बेवस्था करीं। बस, एकरा छोड़ के आउर हमरा कुछो ना चाही।

www.bhojpurisahityangan.com

ओने वासवदत्ता मने-मन ई सोंच के बहुत दुःखी होत रही कि अब आर्य जौगंधरायन हमरा के छोड़ि के चल जइहन। फेरू ई सोंच के ऊ सानत रही कि ई जे कुछो करिहन, बहुते सोंच-समझ के आउर हमरा कैलाने खातिर करिहें। कंचुकी राजकुमारी से कहली कि राजकुमारी, एह परिव्राजक के जचना त बहुत बड़ बड़ुए। धन आदि दान दीहल त बहुते सहज बा लेकिन केहू के थाती राखल बहुते कठिन। राजकुमारी कहली कि जब एक बेर ई घोसना हो गइल त ओकरा के पूरा करहीं के परी दासी कहलस कि जी हँ ! राजकुमारी के स्नेह का कुतूहल के चलते हम उनुका के बहुते आछा तरह से देखली हँ। ऊ देखे-सुने में कइसन बाड़न ? वासवदता पुछली। दासी कहलस कि का कहीं बेलकुल अनुपम। हम त आजु ले अइसन पुरुख देखबे ना कइलीं। ठीक ईहे बुझाता कि अपने कामदेव धनुस-बान राख के, आ के खड़ा बाड़न। वासवदत्ता कहली कि आछा हो गइल, रहे द अब। दासी कहलस कि ई काहें ? असहिने त रउआ पुछते रहलीं हँ। वासवदत्ता उत्तर दिहली कि एहसे कि पर-पुरुख के अधिका चर्चा आछा ना होखे। दासी कहलस कि तब रउआ जलदिए माला गूँथ दीं। वासवदत्ता कहली कि रख दे।

दासी सुनते मातर बहुते फूल आउर बनस्पति वासवदत्ताके समने रख देलस । वासवदत्ता माला गूँथे लगली। एगो वनस्पति हाँथ में लेके पुछली कि दासी ई कवन बनस्पती ह। दासी ओकरा के सदा सोहागिन बतवली। वासवदत्ता अपना मन में सोंचली कि एकरा के अपना खातिर आउर पद्मावती खातिर भी जादा मात्रा में गूँथब। फिर दोसर बनस्पति हाँथ में लेके पुछली-आउर ई कवन बनस्पति ह ? दासी कहलस कि ई सवत-सालिनी ह। वासवदत्ता कहली कि एकरा के ना गूँथब। दासी कहलस कि ईकाहें ? एहसे कि राजा के पहिलकी रानी मरिए चुकल बाड़ी। अब एकरा के गूँथल बेकार बा। अतने में ओहिजा ऐगो दोसर दासी पहुँचित के कहलस कि आर्ये ! जलदिए करीं। दुलहा एह समय सुहागिनियन के साथे अन्तः पुर में प्रवेश कर रहल बाड़न। वासवदत्ता कहली कि हई ल तइआर हो गइल। दासी कहलस कि ई त बहुते सुन्दर हो गइल। आछा त आर्ये अब हम जात बानीं।

अतना कहि के आउर मंगल माला लेके दूनों दासी ओहिजा से चल देली। ऊ लोग के गइला पर वासवदत्ता के फिरू पहिल के चिन्ता सतावे लागल। अब उनुका से ओहिजा बइठले न जा। तब सोचली कि चलि के शय्या पर सूतीं। हो सकेला नींदे आके एह दुःख आउर चिंता से मुकुती कइ दे।

राजकुमारी पद्मावती के साथे महाराज उदयन के बिआह के सभ कृत्य सकुशल समाप्त हो गइल। अब दूनों लोग सुख से राजगृह में रहे लागल। एक दिन पद्मावती मनो बिनोद आउर बिहार खातिर प्रमद बन में गइली। उनुका साथे एगो-दूगो दासी आ बासवदत्ता भी रही। पद्मावती एगो चटान पर बइठ गइली आउर एगो दासी उनुका खातिर शेफालिका के फूल चुने लगली। थोरिका देरी में पद्मावती दासी के अधिका फूल चुने से रोक देली। जब वासवदत्ता एह रोकला के कारन पूछे लगली तब पद्मावती कहली कि जेह से आर्यपुत्र एहिजा आके ई कुसुम समृद्धि देखीं आ सम्मानित करीं।

www.bhojpurisahityangan.com

वासवदत्ता अपना बतिआवे के नीमन मोका देखि के पद्मावती से पुछली का सखी, का महाराज तोहरा बहुते अधिक प्रिय लागेलन ? पद्मावती कहली कि आर्ये ! ई त हम नइखीं जानत लेकिन अतना जरूर बा कि उनुका बिना हमार मन ना जाने कइसन होखे लागत बा। फिरू हमरा एगो सन्देह बा। वासवदत्ता पुछली कि ऊ का ? इहे कि आर्यपुत्र हमरा जइसन प्रिय बाड़न, का ऊ ओइसने वासवदत्ता के भी प्रिय होइहें। वासवदत्ता कहली कि ओहू से अधिका। तू कइसे जनलू ? पद्मावती पुछली। वासवदत्ता बात बना के कहली कि जदि वासवदत्ता पर राजा के कम प्रेम रहित।

वासवदत्ता कबो अपना स्वजनन के छोड़ि के उनुका साथे जइती। उतने में एगो दासी आके पद्मावती से कहलस कि राजकुमारी ! रउआ महाराज से वीणा सिखलावे खातिर काहें नइखीं कहत ? पद्मावती कहली कि हम कहले रहीं ओह घरी ऊ एगो ठंढ़ा साँस लेके रह गइलन। वासवदत्ता कहली कि – एहसे तूँ का समझलू ? पद्मावती कहली कि इहे कि आर्या वासवदत्ता के गुन ज्यादा कइके बस हमरा समने रोवलन भर ना आउर का समझतीं। वासवदत्ता मन में सोचली कि जदी साँचो इहे बात बा तब त हम धन्य बानीं। अतने में बसन्तक के साथे लेले महाराज उदयन भी बन में आ गइलन। विदूषक प्रमद बन के शोभा के प्रसंसा करत कहलस कि देबी पद्मावती कहवाँ गइलीं ? उहाँ के लता मंडव में बानीं कि बाघचर्म नीअन दिखाई पड़े वाला आउर असन बृक्ष के फूलन से ठँकल पर्वत तिलक नावँ कि शिलापटल पर बइठल बानीं ? चाहें तेज गंध से पूर्ण सप्तच्छद-वन में बानीं ? कि खग मृग आदि के मूर्तिअन से सजावल दासपर्वत पर गइल बानीं ?

अतने में ओकरा अकास में बहुते गो सारस पाँत बान्हि के उड़त लउकलसन। ऊ लोग के देखि के ऊ कहलस, अहा, शरत् काल के निर्मल आकास में बलदेव जी के बढ़ल भुजा नीअन सारसन के ई दर्शन जोग पाँत कइसन समाहित भाव से उड़त चलल आ रहल बा! जबले महारानी नइखी आवत तब तक महाराज ई सारसन के देखीं।

उदयन कहलन कि हाँ सखा, देखत त बड़ले बानी। ओने से पद्मावती भी अपना दासी आउर वासवदत्ता के साथे आवत रही। दासी कहत रही कि राजकुमारी, देखीं-कमल के माला नीअन सुन्दर सारसन के पाँति कइसन समाहित भाव से उड़त चलल जा रहल बा। अतने में ऊ लोग के समने थोरिका दूरी पर महाराज आ बसन्तक दिखाई पड़लन जा। उनुका के देखिके पद्मावती कहली ओ ई त आर्यपुत्र हईं।

पद्मावती ओनहीं बढ़ल चाहत रही लेकिन कुछ सोंच के ऊ बासवदत्ता से कहली आर्ये! एह समय हम तोहार साथ छोड़ि के आर्यपुत्र के पास ना जाइब। चलऽ हमनी के माधवी मंडप में चले के। ई कहिके पदमावती वासवदत्ता आउर दासी के साथे माधवी मंडप में घुसली।

क्रम से...

☆☆☆

www.bhojpurisahityangan.com

ललसा

विद्या शंकर 'विद्यार्थी'

सुमना के माई मालती सब लइकन के आधा-आधा पेट खिआ के अपने पानी पी लिहली आ बरतन मांज के अइली त चहली कि सभनी के निमन से ढांक-ढूँक के सुता दीहीं। नात कहीं जाड़ गड़ि गइल त अउरि भारी मोसकिल होई। गरीबी त एगो गइले बिया। कहाँ से पइसा आई कि दवाइओ होई। जवनो अगहन में खाए चबाए के होई तवनो बिका जाई। सब लइका कुल-बुलात रहनसँ कवनो के आँखि में निंद ना, पपनी सटो कइसे आधा पेट खइला से। सुमना सभन से बड़ बा अमना छोट अभवा माझिल हिय, पुनमी तेतर। सुमना टेंहटारो हो गइल बा, खाली बुद्धिये छेरेला। माई कहलहिनसँ - "का बबुआ सुतलनऽ जा ना अबहिन, निंद नइखे लागत आ तुहूँ लोग ना सुतलू ?" तीनों के जबाब ऊहूँ भइल बाकि सुमना के कुछ आउर - "निंद कहाँ लागत बा ए माई। भादो में त तू आपन लोर पिआ के सुतावते रहू हमनी के। अब अगहनो में अधे पेट खिआवत बाड़ू। कहत बाड़ू कि काल्ह खइहऽ जा। काल्ह के देखले बा ?" सुमना लेदरे में से मुँह उघारि के कहलस "केहू ना, बाकि हम देखाइब" मालती साहस दिहली "तू कहाँ से देखइबू भाई, हम तोहरा से कहीला कि तू हमरा के केकरो गरूआरी धरा द, त तू कुछ बोलबे ना करेलू। जब हमहूँ कमाइब त घर मकान बनी भा ना, बाकी पेट के दुख त ना होई। त तू कहेलू कि जिरह जन करऽ पढ़े जा। अपना बारे में सोचल जिरह कइल ह भाई ?" लइका के बुद्धि आ पेट के दुख इहाँ तक ढकेल ले आइल -

"हँ" मालती सहजे कहली

"ऊ कइसे ?" फेन पुछलस

"पढ़े लिखें से फएदा होला।'

"मालती समुझवली "कवन फएदा, बाबूजी के लागल नोकरी सरकार छुटुका दिहलस। कल कारखाना बंद होखे लागल। बाबूजी एतना पढ़ लिख के अब कदई में लेटाताइन त ई हमरा निमन नइखे लागत। तू हमरा के कम्प्यूटर पढ़इबू का ?"

"हँ" मालती भरोसा दिहली ।

सुमना के जम्हाई आइल त ओकर माई कहली कि सुतऽ बाबू, अब रात ढेर चलि गइल। विहान बोझा बान्हे जाए के होई। हम एक लूँड़ी जोर बर लेत बानी। सुमना अँउघा गइल। सुमना के बाबूजी बिजेन्दर धान के पथारी घुम के बधारी से घरे अइलन। केवाड़ी के फांक से दीया के अँजोर जनात रहे। ऊ खोंख के कहलन - "जगले बाड़ु का ?" सुमना के माई केवाड़ी खोलत कहली" हँ, आईं।"

"का करत बाड़ु ?" बिजेन्दर घर में घुसत कहलन

" जोर बरत रहीं।"

" एतना रात के ?"

"राउर आवे के इन्तजार करत रहीं, सोचलीं जगतो रहब आ जोरिओ बर लेब। खाए काढ़ि ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"काढ़S"

"तू खइलू, लइकवा खइलनसँ ?" छोहे पुछलन

"हँ.....खइलनसँ।" ऊ सकुचात कहली

"सकुचात काहे बाड़ू ?" जानल चहलन

"सुमन के बात प अँठिली अँढक जाता" थरिया में थोरिका भात देत कहली

" का कहता ?"

"कमाये के, गरूआरी धरे के.....।" सुमना के माई एह बात के दुःखे आपन लोर पोछत कहली आ बइठ गइली। उनुका लागल कि हम अपना मरद के भात ना दुख खिआवतानी, पानी ना लोर पिआवतानी। जवन कि भादओ अइसन तंगी में ना परोसत रहीं।

" तू कुछ ना समुझवलू ?"

"सब समुझवलीं, अब एह दरकल करेजा से कुछ जन पूछीं, कुछ जन.....।" मालती के टप टप लोर चुवे लागल।

थरिया में थोरिका छूँछे भात देखि के सुमना के बाबूजी आँट लगा लिहलन कि मालती कुछ नइखी खइले। उन्हुको करेजा दरकि गइल। अँचऽ के बीड़ी पीए लगलन। दूनों बेकत के नजरि के सोझा बिहान बोझा बान्हे के आ होनहार सुमना के अवहिये से पढ़ा लिखा के अगहूँ कम्प्यूटर पढ़ावे के लालसा लउकत रहे।

गिरिडीह, झारखण्ड

☆ ☆ ☆

पाषाणी

पहिलका अंक पहिलका दृश्य

अहथान – राजर्षि जनक के महल के डाँड़ी

समय – बेलकुल सबेरहीं

(जनक आउर विश्वामित्र)

विश्वामित्र – राजर्षि जनक! का इहे ब्राह्मणत्व ह ? बरहमन जाती एही सम्पत पर अतना अगराली ? हम त अवहेलना के साथे, इसारा भर पर तुछ–तप कइके ओकरा के प्राप्त कइ लेलीं। ओइसहीं ओकरा के ठेंगा देखा के बिना लोभ के, अनायास रहती के कीचड़ में ओकरा के माँटी के ढेला नीअन बीग सकी ला।

जनक – विश्वामित्र रिखी अहंकार मत करऽ । तूँ अगर ब्राह्मणत्व पवले बाड़S, त बरहमन जात के विनय से, अपना गुन से नाहीं। आउर फेरू इहो इयाद रखिह कि भले तूँ ब्राह्मण हो चुकल बाड़S तबो तोहार आसन ब्राह्मण से बहुते नीचे बा।

विश्वामित्र – एकर सबूत ?

जनक – सबूत रिखिबर, एक दिना नदी के ओह पार गउतम के आसरम में जा, उहँवे एकरे सबूत तहरा मिल जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वामित्र – महर्षी गउतम ? जिनकर मेहरारू परी, सुनरी अहल्या हई ऊ गिरहथ हवन। उनुकर आसन हमरा ऊपर बा ?

जनक – बहुते ऊपर बा बन्धुवर । एह बात के तूँ अपना आंखिन से देखबऽ।

विश्वामित्र – साँचो ? आछा बात बा, देखब।

दोसरका दृश्य

अहथान – तपोवन के भीतर, बन के गली

समय – सबेरे

(तपसी लोग के लइका – लइकी जा रहल बाइन)

तपसियन के लइका – लइकी गावत बाइन –

तपसी हमनी सभ बन के
बन में सभ निरमल मन के
हरिअर बा मन, फूलो-फल बा
झरना के शीतल जल-कल बा
अइसन दृश्य तपोवन के
तपसी हमनी सभ बन के
भोरहीं कोइलर कुहु-कुहु करे
सभ कानन में इमरित झरे
अइसन रूप नंदन वन के
तपसी हमनी सभ बन के।।
दुपहरिया बीते छाया में
नदियन के जल के काया में
साँझे बहे पवन सन के ।।
तपसी हमनी सभ बन के।।

दूसरा दृश्य

चिरंजीव के प्रवेश

चिरंजीव – एहिजा के – के बा ?

तपसियन के लइका-लइकी – अजी हमनी के बानीं जा।

चिरंजीव – हुँ, तोहन जाना बड़का अदिमी हवऽजा। जा – जा।

चिरंजीव – आछा ठहरजा लइका-लइकी जाइल चाहत बाइन तोहने लोग से पूछे के परी। अरे सुन-सुन।

लइका-लइकी – का ?

चिरंजीव – अरे बता सके लजा कि हम का करीं ? एगो बड़का संदेह में पड़ गइल बानीं।

www.bhojpurisahityangan.com

पहिलका लइका – का सन्देह वा महाशय ?

चिरंजीव – सन्देह ई वा कि धम से गिरे ला कि गिरला पर धमाका होला ?

दुसर का लइका – साँचो ई त वड़ा भारी सन्देह के बात वा ?

तिसरका लइका – त ई बात रउआ महर्षि से काहें नइखी पूछत ?

चिंरजीव – पुछले रहीं।

तिसरका लइका – महर्षि का कहलीं ?

चिरंजीव – महर्षि कुछऊ ना कहस।

दोसरका लइका – अउरी रउआ ?

चिंरजीव – हमार ईहे राय वा।

चउथका लइका – त अब निरनय कइसे होई ?

चिरंजीव – ईहे त गड़बड़ वा। दरसनशास्त्र के कवनो मसिला के निरणय ना होखे। अरे तूँ लोग दरसन सास्तर के बात सुनबऽ जा ?

सभ लइका–लइकी – कहीं, सुनब जा काहें ना। चिरंजीव गावत बा

वाह ई दुनिया बा रंगीन
दिन के पिछहीं रात बा, रात के पीछे दिन
बात कुल्ही एकर संगीन
एके ऊपर दू तब बारह, एक और दू तीन।
गरमी में बेहद गरमी बा सरदी में वा नरमी
जच्चा जने ले बच्चा देखऽ मुरगी दे तिआ अंडा
गऊ पुकारे बाँ–बाँ भइआ, हुआँ हुआँ हो स्यार
कायँ–कायँ काँ कउआ करे रहिह जा होसिआर
हाथी ऊपर हउदा चढ़े घोड़ा ऊपर जीन
धनिअन के सिर चिन्ता चढ़े, दीन बजावे बीन।।
कहऽ भाई एकर मरम, जान ल छूटी भरम ।।

दूगो लइका – बाह ! बाह ! ई त बड़ा भारी दरसन सास्त्र बुझाता

चिरंजीव – कह जा, सभ बात ठीक बा कि ना ?

सभ लइका-लइकी – बेलकुल ठीक बा, खूब ठीक वा

चिरंजीव – हम बहुत सोच–विचार कइके एकरा के कहले बानीं।

लइका – साँचो ! ई सभ राउरे सोच ह ? अइसन रउए सोंच सकी ला।

(नकिति)

☆ ☆ ☆

www.bhojpurisahityangan.com

आजादी के बाद भारतीय मेहरारू

डॉ. नन्द किशोर तिवारी

आपन देस के आजादी मिलला के घटना साधारन ना रहे बलुक विश्व के इतिहास के सभसे बड़ घटना रहे। कई सै बरिस के गुलामी मेहरारू-मरद सभका दिमाग आ दिल पर रात दिन के बोझा बनिके बइठल रहे जवन एक बारगी कुल्ही बन्धन के तूर के आजाद हो गइल। ई आजादी के भावना भी पच्छिम से आइल जगरम आ चेतना से प्रभावित रहे। ओनइसवीं शताब्दी में जब सामाजिक आउर राष्ट्रीय जागरन के देसव्यापी आंदोलन चले लागल तबे सुधारक लोगिन के धेआन नारी देने भी गइल। अब समाज बड़ा गौर से एह नारी सकती के पहचनलस। नारी सिच्छा के प्राथमिकता मिलल आउर उनुका समने जीवन के अनेक आयाम खुले लागल। राम मोहन राय, स्वामी दयानंद, विवेकानंद, पंडित रमाबाई फुले, महात्मा गाँधी आउर एनीवेसेंट जइसन सभ महान् नेता मेइरारू लोगिन के रूढ़ि कुप्रथा आ अंधविसवास से निकाले के कोसिस करे लागल। गाँधी जी मातृत्व के मेहरारू के रूप से उत्तम रूप मानत रहन। शिक्षा ऊ लोग खातिर बहुत जरूरी चीझ उनुका नजर में रहे। बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि पर उनुकर स्वतंत्र विचार रहे। उनुकर मान्यता रहे कि मेहरारू पुरुख के दासी ना हई, आधा अंग आउर दोस्त हई। नारी मुक्ति के अभियान ओही घरी गाँधी जी चलवलीं आ ऊ लोग के आजादी के लड़ाई में खुलि के भाग लेबे खातिर प्रेरना आ प्रोत्साहन दिहलीं। उहाँ के कहनाम रहे कि अगर आजादी के लड़ाई में मेहरारू लोग भाग ना लिहन तब मिललो आजादी अधूरे रही। एहसे आजादी के पहिलहीं मेहरारून के मुक्ति अभियान, आंदोलन रूप में सुरू हो गइल रहे।

आजादी के बाद भारतीय मेहरारून के सरूप, मानसिकता स्वतंत्रता आ सोच बेलकुल नया रूप ले लेलस ऊ अपना क्षमता योग्यता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति के अवसर पावे खातिर मचले लगली। वोट देबे के समान अधिकार त उनुका अधिकारे के साथ मिलिए गइल। कानून के नजर से भी ऊ पुरुख के बराबर हो गइली। पहिले भी भारतीय समाज उनुका के बराबरी पर रखले रहे लेकिन बीच के समया गुलामी में देस के जादा दिन बीतल एहसे पुरुष के बराबरी ऊ ना कर सकत रही। फेरू शारीरिक आ प्राकृतिक उत्तरदायित्व के चलते पुरूख से भिन्नता जरूरे रहे। जवन जतना मरद करत रहन ओतना काम करे के क्षमता त उनुको में रहते रहे। मातृत्व के दायित्व उनुकर अनमोल रतन रहे। एने 'ओकले' जइसन मनोविज्ञानिक लिखले बाइन कि बोले में, लिखे में, भाषा प्रयोग के उचारन में, सूछम दृश्य भेद में, दृष्टि संधान में आउर यादगारी में मेहरारू मरद से श्रेष्ठ होली। जेम्स हैमिल्टन लिखले बाइन हर अपदा में आघात झेले के अद्भुत क्षमता बा। एही से ऊ लोग जादा दिन जिएला। आजादी के बाद भारत के मेहरारू लोग एह विचारक नन के कुल्ही बात जवन सिधान्त में रहे ओकरा के अपना जीवन आउर आचरन से सिध कर देली। एह से सामाजिक परिवर्तन जरूरी रहे। कवनो तरह के परिवर्तन दूगो रूप में हो ला। ऊ खाली विकासे के ओरे ना जा ओकरा में

www.bhojpurisahityangan.com

गिरावट भी आवेला लेकिन ओकरा सरूप में अन्तर जरूर आवेला। एहसे दूनो प्रक्रिया परिवर्तन ह। संछेप में पहिले के अवस्था आ अस्तित्व में अन्तर अइला के ही परिवर्तन कहल जाला।

सामाजिक परिवर्तन के मतलब ह कि समाज के अधिकतर लोग एकतरह के काम में लागल बाइन जे कि उनुका पहिले के लोगन के कार्य से भिन्न बा। अइसे त सामाजिक परिवर्तन बराबरे होत रहेला। यूरोपीय देसन में जवन क्रांति होत रहे ओकरा मूल में जनतंत्रे के माँग रहे। एह तरह के भावना के विकास जब अपना किहाँ भइल त ओकर छाप इहां के मेहरारू लोग पर भी पड़ल। ओह में स्वतंत्रता समानता दू गो स्तंभ बहुते प्रासंगिक रहे। ई व्यक्ति के सामाजिक स्तर पर बहुत प्रभावित कइलस। अपना देस के परिवार संयुक्त रहे। भारतीय समाज के आधार संयुक्त परिवार रहे। ई परिवार संस्था कानून आ रीति-रिवाज पर चलत रहे। खेतिहर समाज में मेहरारू के दुनिया चूल्हा, चक्की, बच्चा के पालन, पुरुख के साथे खेत खरिहान में हाँथ बँटावे तक सीमित रहे। आजादी के बाद मेहरारू अपना के पुरुख के बराबर माने लगली। संयुक्त परिवार के जवन दोष रहे ओकरा ओरे ऊ लोग के बहुते प्रतिक्रिया देखे में आवे लागल। ऊ अब सभका साथे का सास ससुर ननदी के साथे नइखी रहल चाहत। ई व्यक्तिवाद के प्रभाव भी ह आउर हर कदम पर आजाद रहे के अभिलाषा भी। कृषि परिवार में अधिका अदिमी के जरूरत रहे। आधुनिक ढाँचा परम्परागत परिवार से अलगा बा। जनसंख्या के बढ़ला से ओही पर अश्रित होके जीयलो कठिन हो गइल। आज के जीवन दृष्टि आ मूल्य में अंतर आ गइल। हर जीवन मूल्य आउर धारणा सामाजिक संगठन आ व्यवस्था से प्रभावित होला आ करे ला भी। यातायात आउर आवागमन के बढोतरी से भी सामाजिक परिवर्तन में गति आइल। अइसे हर परिवर्तन के अदिमी उत्साह से स्वागत भी करेला। अपना के अलगा करके देखे में ओकरा मजा मिलेला। अब के परिवर्तित मूल्यन के कारन अपना पुरूख चौखटा के तोड़के परिवार भी नारी के लचीला रूप स्वीकार करे खातिर मजबूर हो गइल। जवन मेहरारू खेत खरिहान में साथ देत रही ऊ अब ऑफिस में देबे लगली। मरद भी अब जीवन के हर क्षेत्र में उनुकर भागेदारी स्वीकार करे लगलन बलुक उनुका के आपन एगो रच्छा करे के कवच बना लेलन। प्रशासन, राजनीति, शिक्षा, डाक्टरी, इन्जीनियरिंग खेल आकाश, साहित्य, संगीत सगरो मेहरारू लोग आपन लोहा मरद लोग से मनवा लेली। उनुकर प्रतिभा मरद लोग खातिर अनुकरण आउर ईर्ष्या के विषय बने लागल। अपना मातृत्व के भार के भी अपना प्रतिभा के मारल ऊ ना चाहे लगली। सेना, लड़ाई, गुप्तचरता सगरो जहाँ मर्द के दबदबा रहे आउर मेहरारू खातिर कठिन काम रहे, मशीन युग उनुका के सगरो फइला देलस। ऊ पीछा ना रहली कतहूँ कवनो समर में। एहसे, आजादी के बाद मेहरारू लोगिन के एगो विसेस साझा आ भागेदारी जीवन के हरेक मोड़ पर देखे के मिलत बा।

लेकिन एकर एगो दोसरो पक्ष बा। जहाँ उनुकर बाहरी आजादी उनुका भीतर स्त्रीत्व के मारके, जहवाँ दया, माया, मोह, क्षमा, उदारता आदि कोमल गुन रहे ओकरा ऊपर कुंठा,

www.bhojpurisahityangan.com

त्रास, सेक्स, भय, घृना नीअन दुर्गुनन के उनुका भीतर भर देलस। अगर साहित्य अदिमी के मन के परत के प्रतिबिंब, समाज के सीसा ह त आजु के कहानी उपन्यास कविता में नारी के रूप भी खूबे उजागर हो रहल बा। एहमें पुरुष रचनाकारन के साथ महिला लोग भी साथे होके अपना भीतर के आछा–बुरा परतन के उजागिर करत देखल जाता। प्रेम बिआह आ अन्तर्जातीय बिआह के मान्यता त मिलल लेकिन ओह से मेहरारू–मरद सुखी ना भइलन। पहिले जवन समाज के मान्यता के खोखला करार देके आपन आधुनिक मान्यता के ढिंढोरा पिटत रहे ऊ गाँचो के प्रेम सम्बन्ध प्रेम बिआह में निभत देखात नइखे। स्त्री–पुरुष दूनों के मन के संका जात नइखे तब प्रेम भइल कहाँ ? 'सेक्स' के ओरे जवन समाज के नैतिक–मान्यता रहे ओकर सदाचार के अवहेलना से नाया–नाया रोग बढ़े लागल। पच्छिम के सोच में भारतीय परिवार के अवधारणा ना रहे। ओह सोच में चलला से अपना के मानसिक रूप से स्वस्थ मेहरारू लोग ना कर पवलस। विवाह विच्छेद से समस्या के समाधान होत ना दिखाई पड़ल। यौन सम्बन्ध के आजादी जवन सभ्य समाज में ना रहे लेकिन ऊहो भितरे–भीतर मिले लागल। अश्लीलता आ देह प्रदर्शन सिनेमा अखबार के पृष्ठन के शोभा हो गइल। मेहरारू के विग्यापन के सभसे नीमन साधन बना लीहल गइल। उनुका में लोलुपता भी बढ़ल। एह से व्यभिचार आ बलात्कार के, मर्यादाहीन शरीर व्यापार के दौर के भी झोंका नारी समाज के झेले के परल, आ झेले के परत बा। संस्कृति के एह मोड़ पर आजादी के बाद के मेहरारू खड़ा बाड़ी।

★★★

लिरिक–10

देव कुमार मिश्र 'अलमस्त'

धैर्य बल हो विभव साली
नाना करम करे वाली
महाबली हो अग्नि देवितू
आवऽ आवऽ आवऽ
सोम–रस अनमोल पावऽ
सभु संहारक बिनासक
उग्रवादी दुष्ट नासक
सप्त–पथ के रस जननिहो
मां आवऽ आवऽ आवऽ
सोम रस अनमोल पावऽ
ध्यान विनय वानी पर दऽ
वढ़ुए इहवा सोम रसप
दस अगुरी से सिद्ध कइल मां
आवऽ आवऽ आवऽ
सोम रस अनमोल पावऽ

www.bhojpurisahityangan.com

लिरिक – 11

रिधि सिधि दउलति देति भवानी
करति प्रशस्ति सुबुद्धि भवानी
सान्ति सुभ्र सुचि मूरति माता
सरस्वती तू आवऽ आवऽ
जग हो नाम पबित्तर आवऽ
रस सोमअन अनमोल पावऽ
वृहद ज्ञान के महा समुन्दर
प्रगट करे वाली उर उर्वर
भरि-भरि देलू ज्ञान बुद्धि में
सुनत प्रार्थना आवऽ आवऽ
वीणा वादनि आवऽ आवऽ
रस सोमअन अनमोल पावऽ
सुभ कर्म के प्रेरक भवानी
सुख-साधक तूहऊ भवानी
वृद्ध महान महादेवी तू
आवऽ आवऽ आवऽ आवऽ
इहाँ सोम इहवें तू आवऽ
रस सोम अन अनमोल पावऽ

लिरिक – 12

रक्षक हो धारन हो दाता
पथ जोहत जग में हविदाता
तू सीघ्र करे वाला जग कर्ता
यज्ञस्थल पर आवऽ आवऽ
विश्वे देवा आवऽ आवऽ
सुभ यज्ञ के सुभ अन्न पावऽ
अमर चतुर सुख साधक आवऽ
सूर्य किरन अस ज्ञान करावऽ
सुद्ध यज्ञ में आवऽ आवऽ
महा देवता आवऽ आवऽ
विश्वे देवा आवऽ आवऽ
सुभ जज्ञ के सुभ अन्न पावऽ
कइल सिद्ध सुचि जानल जानल
इहाँ सोम रस राखल-राखल
प्रिय तहार आगमन जरूरी
निश्चय आवऽ आवऽ आवऽ
सुभ भज्ञ के सुभ अन्न पावऽ

हेतमपुर, भोजपुर, बिहार

***

दोहा

डॉ. विशवम्भरनाथ पाण्डेय 'विश्वप्रेम'

भोजपुरी साहित्य के, आईं भरी भँडार।
गीत, कहानी सभलिखीं, गद्य-पद्य संसार ।।
लिखत बानी स्वानुभूति, आ अधीत-श्रुत बात।
मरमी-जन छेमा करी, नुक्ताचीन अघात।।
का गुमान धन-विभव पर, का तन के अभिमान।
सब पानी के बुलबुला, बस अहथिर भगवान ।।
रस-लालच देखीं तनीं, अहि के मुँह के भेक।
मच्छर आवत देखि के, झट जिभिआ दे फेंक।।
भ्रष्टाचार त अब बनल, व्यापक लोकाचार।
दुराचार समरथ भइल, सदाचार लाचार ।।

www.bhojpurisahityangan.com

आपन मत बस शुद्ध बा, दोसर के बेकार ।
सभे करत अस बूझिके, वैचारिक व्यभिचार ।।
पहिले सागर उदर में, बाद गइल शिव-कंठ।
अधुना विष खल वदन में, भा बाटे अहि-दंत ।।
भोटे से सभ बनत बा, धन, जन पति सिरमौर ।
लोकतंत्र धनतंत्र में, पहुँचल पापी ठौर ।।
साधन-साध्यो एक बा, जस साधन तस साध्य ।
ना मिलिहें श्रीरामजी, जो रावण आराध्य ।।
ब्रह्मरूप निराकार हऽ, माया हऽ साकार ।
भिन्न भिन्न आकार में, मायावृत संसार ।।
प्रज्ञा के अवतार ई बालमीकि रिखि व्यास ।
रामचरित लिखले सिरी बाबा तुलसी दास।
धन बाटे तऽका भइल, बेटा लंठ-लबार ।
औरी जुआ शराब-में, हँसे गाँव जँवार ।।
बाइऽ लिपटल जगत से, ई माया के मार ।
जर जोरू के के कहे, ना तन तनय तहार ।।
पाँती लिखल प्रेम के, गोपी गन के हाथ ।
बिना पता कागज मसी, पा गइलीं वृजिनाथ ।।
आत्मालोचन करीं की, लोचन सार्थक होय ।
आत्मालोचन ना करे, से ना पण्डित होय ।।

भवदीयम्, थाना मार्ग, लोहरदगा (झारखण्ड)

★★★

ऊ पहर

कमलनयन दुबे 'कमल'

निहारे एक टक दुनिया कि जब केहू सुघर होला
हटवलो से हटे ना आँख अइसन ऊ पहर होला
खिलेला फूल जब बगिया से मधुमय गंध आवेला
त भँवरा प्रेम-रस-लोभी तुरत आसन जमावेला
कमलिनी बन्द हो जाले प्रिया-बन्दी भंवर होला
हटवलो से हटे ना आँख अइसन ऊ पहर होला

www.bhojpurisahityangan.com

पड़े जब कान में हरिना के मादक बांसुरी के स्वर
निछावर ऊ करेला प्रान सकुचे ना तनिक पल भर
पतंगा जरि मरे दीपक पर आसिक ऊ अमर होला,
हटवलो से हटे ना आँख अइसन ऊ पहर होला
चकोरी चाँद के ताकेले एकटक रात-भर-कगरी
अरून के राह में ढरकल उषा के रंग भरल गगरी
मधुर अनराग के बंधन कठिन लेकिन डगर होला
हटवलो से हटे ना आँख अइसन ऊ पहर होला
कहीं नारद आ बिस्वामित्र रूपवा पर लोभा गइलन
कन्हइया राम भी नेहिया के धागा में बन्हा गइलन
सुघरकन के जगत भर में 'कमल' अजबे असर होला
हटवलो से हटे ना आँख अइसन ऊ पहर होला

दिनारा, रोहतास

☆☆☆

दिनेस जी के दूगो गजल

गजल – 1

जिनिगी में बस अँधेरा बा ।
हर कदम पर हजार फेरा बा ।
रोज बूड़ति बा साँच के कश्ती,
झूठ का गाँव में सबेरा बा ।
लोग चेहरा बदल रहल बड़ुए
पेट – धंधा के सुघर बेरा बा ।
बात सावन के सुनाइल लेकिन,
गाँव में धूप के बसेरा बा ।
'गार्ग्य' सब दर्द छिपवले रहिहऽ,
एहिजे बेदर्दियन के डेरा बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

गजल – 2

जिनिगी हमार अब ले केकरा से ना ठगाइल ।
साधू के भेख धइले चोरे सभे भेंटाइल ।।
विसवास के तिजोरी रखलीं ना बंद कबहीं,
जेही समीप आइल, ऊहे लेके पराइल ।
आवेला याद हरदम दोस्तन के सुनर बगिआ ,
हमरा त उहवाँ हाथे पतई सुखल भेंटाइल ।
मनलीं जे हमरा पाँवे तर मरूभूमि बा मगर
आँखियन् के घटा सावनी रोकला से ना रोकाइल।
केकर बा दोष कबहीं हमरा समुझ ना आइल,
चाहेलें 'गार्ग्य' अजुओ हरदम नियर छलाइल ।

दिनेश गार्ग्य
गार्ग्य साहित्य सदन, पहाड़ी, रोहतास (बिहार)

★★★

चीठी

सिपाही पाण्डेय 'मनमौजी'

चीठी में केतना बात लिखीं हम केतना बात छिपा जाईं
पीड़ा केतना आंचर बांधी केतना तोहरा के भेजवाईं
मुनिया के कपड़ा फाट गइल मुन्ना इस्कूले ना जाला
ना खरिदाइल कॉपी किताब कपड़ा कहवाँ से सिलवाईं
बिटिया के उमिर जवानी के देहरी पर पांव धरे लागल
बर खोजे खातिर हम अवला कवना-कवना गावें धाईं
रोजे मलकाइन आवेली दू बात सुना के चलि जाली
घर में अनाज के दाना ना डेढ़ा कहवाँ से ले आईं
अइसन आइल सूखा एहिजा घसियो के रोटी मुसकिल बा
नयना में आँसू ना बांचल जे सावन में भी बरिसाईं
चीठी के तार समुझिय तूँ जल्दी से जल्दी चलअइह
अइला से तनिको कतरइलऽ त कुल परिवार बिला जाईं
चीठी में केतना बात लिखीं हम केतना बात छिपा जाईं

भगवानपुर, कैमूर

★★★

www.bhojpurisahityangan.com

सार के दोहा

बरमेश्वर सिंह

साली सरहज सार आ, सास ससुर ससुरार ।
ई असार संसार में, ई सकार सब सार ।1।
जब-जब आन्हर बा भइल, धरती पर सरकार ।
तब-तब पाँसा सार के, दिहलस बाजी मार ।2।
इहवाँ के सरकार में, सार महज बा सार ।
शकुनी से साधू तलक, गहगह बा दरबार ।3।
बा असार संसार में, सारन के भरमार ।
सबसे सेसर बा मगर, जे सरकारी सार ।4।
बड़कन सब के ए घड़ी, बदलल हवे विचार ।
हाथी पालल छोड़ि के, बा पालत अब सार ।5।
हाथी कबो रहे इहाँ, कबहूँ शोभा कार ।
अब दुअरा के बा मगर, डिस्को शोभा सार ।6।
बेटा बेटी मेहरी, घलुआ में बा सार ।
एह जमाना में हवे, नया बनल परिवार ।7।
भाई पढ़ि के का करी, होखी ऊ पटिदार ।
सज्जन जन ई सोचि के, हवें पढ़ावत सार ।8।
ई असार संसार में, सार महज दू जीव ।
खादी खाकी ओढ़ि के, बा पीयत जे घीव।9।
ममहर ददिहर का कहीं, नाता भइल पुरान ।
ले दे के बस एक अब, नाता बा सढ़ुआन ।10।
भाई से बेफाँट आ, साढ़ू से बा प्रेम ।
एह जमाना के हवे, घर-घर के ई नेम ।11।
बाप मतारी ताक पर, सास ससुर परधान ।
टुकुर-टुकुर ताकल करीं, बबुआ भइल जवान ।12।

धनडीहा, भोजपुर

☆☆☆

गीत

स्वामी फंदोत्तीर्णानंद पुरी

बीति गइल जाड़ा के कठुआइल रात ।
परदेशी कइसे कहीं मनवाँ के बात ।।
अंग अंग सिहरेला आवेना नींद,

www.bhojpurisahityangan.com

लुगवो त फाटि गइल झालर मानींद ।
चकवा के बोली अब नइखे सुनात,
परदेशी कइसे कहीं मनवा के बात ।।
पीपर पऽ सुगवन्हि के नइखे बसेरा,
खोंढ़रा में भइल बा उरूआ के डेरा
ऊपर से देवता अस भीतर जमराज,
लउकत बा सगरो बस राकस के राज ।
टीटहरी उड़िउड़ि खोंता पऽ जात ।।
परदेशी कइसे कही मनवा के बात
मन के हिलोर बनल आँखिन के लोर,
ताकिला राह जइसे ताके चकोर ।
कुम्हिलाइल जिनिगी के सपना रंगीन,
असरा में बीतेला सोना अस दिन ।
पपीहा के बोली अब नइखे सहात ।।
परदेशी कइसे कहीं मनवा के बात ।
बीतेला दिन अउर बीतेले रात,
सपना अस लागे उ प्रीत भरल बात ,
ना जानीं देश कवन कइसन बा लोग,
जाके जहां तोहरा पऽ लागल बा जोग,
पनबुड़िया रेती पऽ बइठल देखात,
परदेशी कइसे कहीं मनवा के बात ।।
हम त ना जानीला जादू भा टोना
ना जानी जिनिगी के कइसन बा होना ।
भेजि रहल बानी हम तोहरा के पाती,
सेनुर का किरिये ए जीवन संघाती ।
जिनिगी के दुखड़ा अब नइखे सहात ।
परदेशी कइसे कहीं मनवां के बात ।।
गुलफुल जे देखलऽ अब हो गइल उदास,
चन्नन सुखाई गइल जामल परास ।
उजरी बकुलिया लवटि गइल देश,
लवटि आवऽ तुहूं अब पाके सनेस,
अधिका का लिखी अब नइखे जनात,
परदेशी कइसे कहीं मनवाँ के बात ।।

रामडिहरा, रोहतास

★★★

www.bhojpurisahityangan.com

नवगीत

गंगा प्रसाद 'अरुण'

"अनकर अरजन पर अगराइल
लहसत धूम-धड़ाका बोले
का- का बोली हो मोर बचवा"
– काका बोले ।
"सुघरी रहल कुँआर
दुआरे ठहरे के दो देला हो ?
सुरसतिया से मुँह फेरले
सब लछिमिनियाँ के चेला हो ।
माड़ो से पसरल मसान तक
सगरो टन–टन टाका बोले ।"
"एने चले ठिठोली
ओने गोली के बरसात हो ।
साँझ–सकारे मउवत के
कब मिल जाई सौगात हो ।
गाँव–नगर, नुक्कड़–चौराहे
जमल खून के थाका बोले ।"
"गइल जमाना मीठा-पानी
प्रेम भरल पकवान हो ।
बोतल-पाउच बन्द इहाँ अब
पंचन के भगवान हो ।
महुआ के मस्ती मे मातल
सँउसे ससुर इलाका बोले ।"
"जे रहले रखवार
कि ओकरे से डर जादे बाटे हो ।
रुप-रुपैया-रंगदारी के
हिरदय से सब साटे हो ।
कोट-कचहरी थाना जा ना
चोर-सिपाही-नाका बोले ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"सभे लालची हीत-हितारो
चाहत पेरल-गारल हो ।
बेटी-पूत-भतीजा-भाई
सब स्वारथ के मारल हो ।
गाढ़-सकेता आँख फेर ले
चान-सुरुज के चाका बोले ।"

टेल्को नगर, जमशेदपुर

★ ★ ★

भोजपुरी भँवरगीत

आसिफ रोहतासवी

छलिया छबीला कान्हा कहिया ले आई
ऊधो बाबा हमनी के देहितऽ बताई ।
केतना ले धरीं धीर अब ना धराता
जिनगी न बाँची अब अइसन बुझाता:
कहिया ले हमनी के रोवाँ डहकाई ।
ऊधो बाबा हमनी के देहितऽ बताई ।
देखऽ, सँवराइ गइली रधिका इ गोरी
कहि देतऽ उनका से – बाटे हथजोरी :
कब ले कदमिया के छाँह अगोराई ।
ऊधो बाबा हमनी के देहितऽ बताई ।
बिना मनमीतवा के लागे नहीं मनवाँ
जियरा जरावे हरियर मधबनवाँ :
मन करे ठाढ़े फूँकि देहितीं जराई ।
ऊधो बाबा हमनी के देहितऽ बताई ।
झनझन करेला बिरिजवा के खोरी
दहिया के चोर करे लागल चितचोरी :
'आसिफ' के जीयते उ दिहले भुवाई ।
ऊधो बाबा हमनी के देहितऽ बताई ।

– कुदरा, कैमूर

★ ★ ★

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

राज्य के कल्याण कइसे होई

जय बहादुर सिंह

आज बिरेसर पहलवान के राज्य के कल्याण मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण के समाचार सुनि के हम आवाक रहि गइलीं। हमरा बिरेसर पहलवान के साथे घटल ऊ घटना याद परल।

हम विहिया चौरास्ता प बस खातिर खाड़ रहलीं। सामने से एगो पहलवान कट अदिमी अपना दू गो शागिर्द के संगे चौरास्ता पहुँचल। एगो लइका मकई के बालि पका के बेचत रहे। पहलवान जी, के आदेश भइल– "तीन गो बालि पका दे त बबुआ।" लइका बालि पका के नमक के साथ ले आके दिहलस। बगल के होटल में बइठि के तीनों जाना बालि खाके चाय पिअले आ चल दिहले।

लइका दउरि के कहलसि– "मालिक पइसा।"

पइसा के नांव सुनि के पहलवान जी के देहि में आग लाग गइल। बोललें– "आरे चीन्हत नइखिस का ? हमरा से पइसा मांग तारे ?" आ खीचि के अस थप्पर मरले कि लइका के गस आ गइल।

ऊ इनका पंजरे के गांव के रहे। संजोग से लइका के गांव के फुटबाल टीम दोसरा गांव से मैच खेलि के लवटत रहे। संगहीं गांव के अउर लेग मैच देखे गइल रहे। सभे ई घटना देखल। ओह में कुछ नवछटिया जवानन से ई अत्याचार बरदास्त ना भइल। ऊ आके पहलवान जी से उलझि गइले स। गंवे गंवे गांव के बाकी लोग आ कुछ दूकानदारो जुटि गइले आ झाका–झूमर होखे लागल। पहलवान जी ओहू में एक आदमी प थप्पर चला के धक्का देत चहले कि निकल जाईं बाकी सब लोग मिलि के पहलवान जी के कस में क लिहल आ अस मारि मारल कि पहलवान जी के आगे पीछे दूनो ओरि के धोती खराब हो गइल। मारिये के डरे उनुकर शागिर्द लोग भागि चलल।

हमरा ना बुझात रहे कि जे आदमी गरीब मुद्दा वाला के तीन रुपया ना दे सके ऊ राज्य के कल्याण का करी।

(अध्यक्ष, जमशेदपुर, भोजपुरी साहित्य परिषद)
होल्डिंग नं.-5, कास रोड नं.-3 जोन नं.-4,
विरसा नगर, जमशेदपुर – 831004

☆ ☆ ☆

www.bhojpurisahityangan.com

डंडे के डंडी
(बढ़ई–बढ़ई खूँटा डंड ऽ)

डॉ. नन्दकिशोर तिवारी

गुनानो कइला प कवनो सब्द के इतिहास भूगोल पानी लेखा मन मे तैरे लागेला। एने बीचे उपेधेआ जी गीता जयंती में आइल रहीं प्रवचन देबे खातिर। अखबार में छपल उहाँ के नाम, पहिले के प्रखंड अधिकारी। ऊ जब ससरॉंव में जतना दिन रहलन सइक पर एगो सोंटा लेके चलस। संसकिरित पढ़ले रहन, बोलिओ के धाको जमावस। हँस के कहस कि पोसाक से, शस्त्र से, अदिमी के पहचान होखे के चाही। हम दंडाधिकारी हईं, ई सोटवे बतावेला। एह लोक के ई डंडा ह आ पर लोक के जमडंड। जे एकरा से एहिजा ना डेराई ऊ ओहिजा जाके पिटाई। बाबूजी कहत रहीं जे कवनो कोट से हारेला ऊ लाठी कोट से जीतेला। लाठा–लाठी (दंडादण्डि) के समानांतर सब्द ह। लाठी के नेवाय सभे मानेला। एही से दण्ड के रूप डंडा ले लेलस।

अब एकरा पहिले के आ अब के रूप पर विचार कर के देखीं। यास्क के निरूक्त में लिखल बा दंड्य पुरूषः (दंड पुरुष) दंडम् अर्हतीति वा। दंडेन सम्पाद्यते इति। दंडो दतेर धारयति कर्मणः। अक्रूरो ददते मणिन् इत्यभिभाषते। मतलब ई कि दंडनीय माने एगो अदिमी जे दंड-जोग बा। चाहे कवनो चीझ जे दंड के साथे रहे। दंड के व्युत्पत्ति 'दद्' धातु से बा जेकर अरथ ह पकड़ल। विचार जोग बात बा 'दद्' क्रिया से दंड के उत्पत्ती। 'धरयति' के अरथ कुछ अटपटाह लागत बा। ओहिजा अक्रूर जी के अखेआन से एकरा के उदाहृत कइल बा। स्कन्द स्वामी आउर महेसर अपना भाष्य में 'धारयति' के अरथ वापिस करे कें, रोक के रखे के मतलब में कइले बाड़न। साँचो दंड के काम अतने ह काम करे से रोक दे। जवन अपराध भइल अेकरा के दण्ड के रूप में वापिस करा लिहल जाला। अक्रूर वाला उदाहरण में 'धारयति' के अरथ बा– कपार पर रोकले रहे के। 'ददते धारयते मणि मस्तकेन स्यमन्तकं नाम'। दुर्गा के मोताबिक, राज में अतेआचार बढ़ला प राजा दंड धारन करे ला। रॉथ महाशय पकड़ला के अरथ कइलन। ई अक्रूर वाला प्रसंग के चलते कहाइल। स्यमंतकमणि के उदाहरण रूप में उद्धरन हरिवंश, ब्रह्मांड, वायु, ब्रह्मपुरान आ गद्य में विष्णु पुराण में आइल बा। एकरा के देखला से साफ लउकत बा कि 'ददते' – धारयति (पकड़ल, चाहे धारन कइल, चाहें रखत बा) के ई व्याख्या 'अक्रूरो ददते मणिम्' से निकलल। अरथ भइल कि अक्रूर मणि धारण करत बाड़न माने रखले बाड़न। मणि के चोरी के काथा सभे जानत बा। एह मनि खातिर कतना जान गइल, केकरा पर ना कलंक लागल। ओकरा ना रहते दुआरिका पर चारू ओर से विपत परल।

www.bhojpurisahityangan.com

एही से एह सब्द में जाके दण्ड घुल-मिल गइल। रजवाड़े जी दंड के अरथ 'छड़ी' मानत रहन। छड़ी हाँथ में धारन कइले जाला आ मणि सरीर पर। चुँके ओह मनि में दैवी सकती रहे। ओकर चरचा पर वेद-पुरानन में खूबी आपन-आपन अरथ खिंचाइल। भागवत आ विष्णुपुराण में आइल बा कि अक्रूर जी ओकरा के एगो डीवा में राखत रहन। छिपवले रहत रहन। धारण क्रिया स्वामित्व के भी अरथ देता। भोजपुरी में एकर प्रयोग होला–फलनवाँ पइसा पकड़ले बाइन। अक्रूर जी के ऊ मणि धरोहर रहे। धरे खातिर दिआइल रहे। धरोहर में धरे वाला वृत्ती त बड़ले बा। एहसे अपराधी खातिर दंड, अपराधी के देवे खातिर 'वद्ध' माने तोहरा 'देवहीं वेऊ परी' वेऊ भी अरथ देता। एह से ओह घरी वेऊ प्रयोग भी बेलवुल ठीके बा।

लौकिक संसकिरित में दण्ड (डम्, दण्ड+अच्) माने यष्टिका, छड़ी, डंडा, गदा मुदगर सोंटा खातिर आइल। एह दंड सब्द के वजन पर जमदंड, काष्ठदंड, द्विजदंड, वहुते सब्द बनल। आतदण्ड राजसत्ता के चीन्ह भइल। द्विजदंड जनेव देवे के वेरी के संस्कार के कहल जाला। छत्रक दंड छाता के डंटा कहावेला – तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप वल नाथ। लघुमन जी मानस में कहलन। संन्यासी लोगन के दंड धरम आ गुरु मंत्र के प्रतीक बनल। हाथी के सोंढ़ के दण्ड कहल गइल। एही से ऊ सभका के दंड देला। फेंड़ के डाढ़ तूरे, चाहें पतई खा, चाहें केहू पर बार करे। सोंढ़े त ओकरा भीरी पकड़े खातिर अस्त्र बा। छतरी के मूठ कवो–कबो डंड देवे के काम करबे करेला। मारब दू छाता। ऊ डंटे के काम करेला। कमल के दंडे पर कमल टिकेला। बड़ा कोमल होला 'कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं' एही से कहल गइल। तूरे में ओकरा कवनो संसय नइखे। मनुजी आ जागबलक जी अपना स्मृति में जुर्माना खातिर दंड के प्रयोग कइलीं जा। कालिदास के समया में ताड़न खातिर शारीरिक दण्ड आ सामान्य दण्ड खातिर ई सब्द चलत रहे। 'यथापराध दण्डानाम्' रघुवंश में आइल बा। सेना के अरथ में भी उहाँ के प्रयोग कइले बानीं 'तस्य दण्डवेत्ता दण्डः स्वदेहान् व्यसिसयत' समूचा सेना खातिर इहाँ कहल गइल बा। मुद्राराक्षस में 'तीक्ष्ण दण्डो राजा' के कहल बा। मनुस्मृति में 'दण्ड दंड्येषु पातयेत्' आक्रमण, हमला, हिंसा खातिर दंड मानल गइल। वशीकरण एकर सुभाव ह, एकरा से नियन्त्रण होला। प्रतिबंध के रूप में एकर प्रयोग वाजिब बा। वाक्दण्ड में ऊल जलूल बोलल, सभा के देखिके बोलल जरूरी मानल गइल बा। एहिजे मौन आभूषण हो जाला। खिसिआके लोग बोलल आपुस में छोड़ देला। कहल जाला फलनवाँ से हमार बोला चाली नइखे। ईहो एगो दण्ड के प्रकारे ह। मेहरारू रूसेली त बोलचाल बन कर देली। खाए-पीए के सब चीझ दीहन, घर के काम कुल्ही करिहन; लेकिन बोलिहन ना। ई वाक् दण्ड रूसला के एगो रूप ह। बड़ा नीमन ई दण्ड बा। जइसे चूमा लेत गाल कटात होखे। मनदण्ड तपसी लोगन के बड़का निग्रह करे वाला दंड ह। ई कामदण्ड से भी कठिन काम ह। मन जतना

www.bhojpurisahityangan.com

तेजी से घूमत बा ओकरा के रोक के एक जगहा पर बइठा देबे के दण्ड मनोदंड ह। कायदण्ड में शरीर के कवनो अंग चाहे कूल्ही पर ताइन कइल जाला। नोंह उपरला पर भी अदिमी आपन अपराध स्वीकार कर लेला। बइ पद पर रहिके छोट काम करेवाला कायदण्ड से सभ उगिल देला। सी. बी. आई. एही दण्ड से बइका-बइका घोटाला के पता लगा लेला। नाकुर-नुकुर करे वाला से सभ उगलवा लेला। कायदण्ड में बइठक भी आवेला जे अपना सरीर के हिफाजत खातिर अपने से करे वाला चीझ ह। एह सरीर के दुनिया में आइल भी दंडे ह। साधू संन्यासी फिर ना आवल चाहस काहें कि जनमत मरत दुसह दुख होई। सभे डेराला जनम लेते एगो संकीर्ण रहता से निकले में कतना दुख होई। मरत बेरी हर अंग के ठोंक-ठोंक के परान निकालल जाई। हमरा हर पाप के फल भोगे की परी। एह से सरीरे मत धारन करऽ। सरीर धारन कइल त रोग से बचावे खातिर ओकरा के कसे के परी। सोना के कसले पर ओकर तेज परगट हो ला। ओइसहीं तोहरा अंग-अंग के आलस ई डंड-बइठक छोड़ा दीही। डंडे देवे के बा त अपना सरीर के दे के बस में करऽ। असंयम में मत पड़ऽ। सूध उचारन खातिर जीभ में अँकड़ी डाल के पहिले पंडित लोग अभेआस करावत रहे, गुनवान बने खातिर त अंग-अंग के गलावहीं के परी।

सरीर में फुर्ती लावे खातिर ओकरा हर अंग के डंड देवहीं के परी। मन त चाहे ना कसरत करे के। एह से मन के डंड, सरीर के अंग के डंड, देबे के परेला। ईहे डंड-बइठक ह। माने मन के उलुटा (विपरीत) जे होला से डंड ह। ई डंड प्रकृति देबे चाहें न्यायालय चाहें अदिमी। साधु संत एह से अपनहीं डंड भोगेलन। संन्यास में दण्ड ग्रहण मन के इयाद राखे खातिर ह। हम संन्यासी हईं। गुरु के दीहल दण्ड ह, खेआल रहे। राजा लोग के चार नीति में एही से दण्ड एगो अहथान पवलस। हर में के एगो अंग 'हरिस' होला। एकरो के दण्ड कहल जाला। हाथी के सोंढ के भी ऊहे नावँ परल। करिकर सरिस, सुभग भुजदंडा। नाव मँ डाँड़ चलवले से उलुटा दिसा में, धारा के विपरीत नाव चलेला। अदिमी के सरीर में जहां डाँड़ कमजोर भइल कि बड़े-बड़े पहलवान निहुर जइहन। खेत के चराई-चोथाई पर डाँड़ लिहल जाला। खेत चरवलऽ त डाँड़ द। एही से गीता में भगवान अपना के दमन करे में डंडे कहलीं- दण्डं दमयतामस्मि। डंड देवे में दमने न कइल जाला। तूँ अपना समया में दमन कइले रह अब तोहार दमन हो रहल बा। मन के भी दमन करे के आदेश दिहल बा-'दमय मनः शमय विषय मृग तृष्णाम्'। पहिले बिहार से शिवचंद्र शर्मा एगो पत्रिका निकालत रहन 'दृष्टिकोण' ओकर एगो स्तंभ रहे - 'दण्डक'। एह में कवि लोग के खूबे खबर लिआत रहे। एहिजा दंडक, डंडक बनि के सभका के सोंटहरत रहे। जमराज भी त दंडके हवन, अपराध खातिर पीरा दीहल, सजाय दीहल, इनकर काम ह। गोसाईं जी एह दंड सब्द से बहुत काम लेले बानीं। जोतिष में

www.bhojpurisahityangan.com

साठ पल के समय के एगो दंड कहल जाला। जइसे एक घरी आधोघरी। काम के कौतुक दुइए दंड में ब्रह्मांड में भरि गइल। 'दुइदंड भरि ब्रह्माण्ड भीतर कामकृत कौतुक अयं। भानु प्रताप राजा डंड लेके राजा लोगन के मुकुत करत रहन 'लै लै दंड छाड़ि नृप दीन्हें।' प्रनाम के साथे दंड भी लागल बा। विनोवा जी हमरा के बतवले रहीं। खाली परनाम नाहीं-दंड प्रनाम। मानस में भी आइल बा। दंड प्रनाम सवहिं नृप कीन्हें। रामायन काल में एगो वन रहे ओकर नाँव रहे दंडकवन। इहवाँ पहिले इच्छ्वाकु के लइका दंडक राज करत रहन। ई अपना गुरू शुक्राचार्य के लइकी से व्यभिचार कइलन। एकरा से रूष्ट होके शुक्राचार्य इनका राज के जरा देलन। अब पूरा राज जंगल में बदल गइल। एकरे नावँ परल दंडकारण्य। रामावतार में कुल्ही फेंड़ हरिअर हो गइलन। रामजी अपावन के सोहावन कर देले। गोसाईं जी बालकांड में लिखलीं – दंडक वन प्रभु कीन्ह सुहावन। जनमन अमित नाम किय पावन। सुपनेखिआ के नाक एहिजे कटाइल रहे। सीता जी एहिजे हराइल रही आउर मारीच बध एहिजे भइल रहे। एगो शब्द ह दंडभृत। दंडभृत ऊ ह जे लाठी ले-ले बा। कोंहार भी दंडभृत ह। बिना डंडा के ओकर काम ना चले। भैरवजी आउर जमराज जी दूनों दंडपाणि हवन। कोंहार के डंडे से पीट के देखात रहे, के कतना साधू बा। केकरा में सहे के कतना सकती बा। शुक्रनीति में पुलिस कर्मचारी के 'दंडिक' कहल गइल बा। लौकिक न्याय में एगो ह दंडापूपिका न्याय। दंडापूप भी एकरा के कहल जाला। डंडा आ पूआ। डंडा में पूआ के गूँथ दिआइल। अगर डंडा गायब त पूओ गायब। ओही में ऊ बान्हल बा बन्हाइल बा। रउआ जवना गाड़ी से निकलतीं, अगर ऊ गायब, त रउओ गायब। ईहे दंडापूप न्याय ह आधेय, आधार प बनल बा। सुरूज भगवान के चारों ओर के ग्रहन में एगो के नाम ह दण्ड– 'माठरः पिंगलो दण्ड'। राजा के चार उपायन में अंतिम ह दण्ड। एकरा से बस मे अवहीं के बा। एह से एकर तीन गो नावँ ह – साहस, दम, दण्ड।

मानस के अकासबानी मसहूर ह – जौ नहिं दण्ड करौं खलतोरा, भ्रष्ट होहिं श्रुति मारग मोरा। श्रुति के रहता बिहार के सड़कन लेखा हो जाई। खल खातिर दण्डे ह। ऊ मीठा वचन से ना माने। भगवान शंकर एही से दंडे दीहीला। खलानां दण्ड कृद्योऽसौ। पंडित लोग दण्ड के धरम रूप में मनले बा। दंडे परजा पर सासन करेला। शिवजी कहत बानीं कि हमार वेद मार्ग दूसित हो जाई अगर डंड ना देब। रामराज में केहू के हाथ में ई डंटा ना रहे। कवनो दुसमन के जीते के कामे ना रहे। छड़ी सभे तेआग देले रहे। अब खाली जती–संन्यासी के हाँथ में ई देखात रहे– 'दंड जतिन्ह कर'। ऊ जब धरम के प्रतीक ह त ओकरा के धरहीं के परी। भोजपुरीअन्ह के त हर बात में गारी आवेला। बिना गारी के वाक्यन में बल ना आवे। कहिहन कि बात ना मनब त डंटा करि देब। अब सोचत रहीं कि ऊ कहवाँ डंटा करिहन।

www.bhojpurisahityangan.com

ओतनवे काफी बा कि ऊ डंटा करि दीहन। ई सब्द दण्ड-दण्डी के रूप में पुरुष लिंग खातिर भी प्रयोग में आवेला। दंडी उठत नइखे। कमजोरी के लच्छन एकरा से परगट होला। ओने सहुआइन डंडी मारे में अतना तेज बाड़ी कि सभका के देखते-देखत पानी पिआ के छोड़ देत बाड़ी। डंटा मारे से भी डंडी मारल जादा खतरनाक ह। पहिले पुलिस के कर्मचारी के नाँव 'दंडिक' रहे। डंडी मारे वालन के भी जे डंड देबे ऊ दंडिक ह। ई सभसे बड़का उपाय ह डंड। डंडे देला से प्रताप आ प्रभाव दूनो परगट होला। धनसमूह दंड माने दम या सेना। एही दूनो से तेज बनेला। राजा के पास ई चार गो उपाय काम करेला। एकरा में से जवना के जरूरत होखे ऊ ओहिजा लगा देला। पहिले त ऊ मीठा-मीठा बोल के समरपन करे के कही। धन दे के, चाहें भेद पैदा क-के, चाहें डंड देके, एकरे संयुक्त नावँ ह उपाय। भोजपुरी में कहाउत ह उपाय से न उपेधआ बनेलन। अमरकोस में दंड के तीन गो नावँ बा-साहस, दम आ दण्ड। सेना के रचना में अनेक भेदन में एगो डंडो ह। 'भेदा दण्डादयो युधि'। जइसे पहिले माटी के गोला के गुड़ कहल जात रहे। बाद में मीठा खातिर चले लागल। अबहिनो कोइला के गोला के गुल कहल जाला। ओइसहीं ई दण्ड भी लाठी खातिर चले लागल। लठवसल लाठी से मरला खातिर कहल जाला। सूगा के कहनी मसहूर ह। जेवना में बिदेस जाए खातिर ऊ दाल के कलेवा खातिर चक्की में डलववलस। एगो दाल ओही में अँटक गइल। एकरा खातिर बढ़ई, राजा, साँप, रानी सभका भीरी अरज कइलस आ सभका के आनाकानी कइला पर डंडे के धमकी देलस। भोजपुरी में साँप-साँप राजा डंडऽ। डंडऽ माने डंड द। दण्डोस्त्री लगुडेऽपि स्यात्। डंगा, डेंग एकरे रूप ह। कबीर साहब लिखले बाड़े-जीवत पियहिं मारहिं डंगा। डेंग रहे हेठार में गेंग खातिर काम देला। ई डेंग दुष्ट खातिर ह, साधू खातिर ना। ओकरा के डंड देइए के राह पर लावल जा सकेला। दुष्टे दण्डः प्रयोक्तव्यः। पछिमो के लोग ईहे मानेला कि डंड अन्यायी के लिए न्याय ह। अगर ई डंड ना रहित त सउँसे संसार नरक से बढ़ि के दुरगत में फँसि जाइत। जब सभे सूत जाला त त डंडे जागेला। नियम के पैवंदी त डंडे करावे ला। डंटे से पहिले अनाज के रासि चउकात रहे। चउकला पर तब ऊपर बढ़ावन धरात रहन। धन हई बालमीकी जी कहलीं कि जदि गुरू भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य के गेआन खो बइठस, कुमारग प चले लागस, त उनुको के दण्ड दीहल जरूरी हो जाला। ए डंड महाराज राउर महिमा के कह सके में हम सक्षम नइखीं गलती के छेमा करब। जवन बुझाइल कहि देलीं।

– निराला सा0 मंदिर
सहसराम, रोहतास

★ ★ ★

www.bhojpurisahityangan.com

हम मनेजर के बेटा हईं

जय बहादुर सिंह

मथुरा बाबू लइका के फजूल खर्ची से परेशान बाड़े/ ऊ एक दिन लइका प कसि के बिगड़ले– "तोहार पढ़ाई लिखाई कुछ लउकते नइखे आ महीना में दू हजार तोहार पाकिट खरच होता, ई ठीक नइखे। हमनियों का कालेज में पढ़ल बानी जा। मेस में नास्ता खाना के अलावा बाहर में साइते महीना में पांचो रुपया खरच होत रहे।"

लइका शान्ति से मुस्कुरात कहले, "राउर जनम गांव के एगो संयुक्त परिवार में भइल रहे आ राउर बाबूजी एगो गरीब किसान रहले। रउआ कंजूसी से जीये के संस्कार मिलल बा। हम टिस्को के मैनेजर के एकलौता बेटा हईं आ मोटर सायकिल से कालेज जाईला। रउआ अपना से हमार तुलना मति करीं।"

मथुरा बाबू बेटा के माकूल उत्तर से अवाक् रहि गइले आ पिनपिना के आगे बढ़े के चहले तले लइका के मतारी आके बीच में खाड़ हो गइली आ कहलीं, "का रउआ हरमेसा लइकवे के पाछे परल रहींला, अउर कवनो काम नइखे।"

विरसानगर, जमशेदपुर

☆☆☆

चीठी–पतरी

प्रिय तिवारी जी,

'सुरसती' देख मन सचहूँ के अगराइल
कुछ महावीर के झलक आँखि में आइल
पढ़ली आसिफ़ के भ्रमर-गीत, हरसइलीं
मनमौजी के रंग में अचकहीं रँगइलीं
नवगीत अरुण के बहुते नीक बुझाइल
बरमेसर के पवलीं बहुते पकठाइल
कविता में सबके बान्ह कहाँ हम पाइब
जतने लेखक पगधूरि माथ पर लाइब
'एथुआ' के अइसन जाल रवा पसरवलीं
सब्दन के माया में खूबे भरमवलीं !
लीं साधुवाद हे अनुज पूज्य, वाणी-सुत
विद्या के मादन तत्त्व आँखि में, तन धुत !

शंभुशरणसिन्हा
एन/14, चित्रगुप्त नगर, पटना

☆☆☆

www.bhojpurisahityangan.com

जुलाई के 'सुरसती' संजोग से पढ़ेके पहिले-पहिल मिलल। पढ़के खुसी भइल कि एह में मानस अइसन संभ्रान्त पाठकन खातिर भरपेटाह खोराक बा आ साथे-साथे सरबसधरनो खातिर बटुराह खोराक मिल जाता। ई पत्रिका सभ अंगन से रूचिकर बिया। लेकिन ओह में कमलजी के रचना नावँ अइसन नइखे हो पावल।

'प्रभाकर' करनौल, भोजपुर

आ. तिवारी जी,

दू-तीन दिन पहिले पांडे कपिल जी के दोहा संग्रह 'जीभ बेचारी का करी' मिलल। भूयिष्ठ भाव से सुन्दर संकलन बा। भावपूर्ण आ सामाजिक, राजनीतिक देश-दशा पर साहित्यिक महत्व के रचना बा। एकर शीर्षक देखिके आठ केशव प्रसाद मिश्र के हमरा के बतावल एगो छन्द रचना के मंत्र इयाद हो गइल 'जिह्वा जाने काव्य रस'। छन्द गठन के रूप-कुरूप, सुरूप के ग्यान जिभिए करावेले। मात्रा गीनिके छन्द रचना भला के करी ? के करेला। रउआ एगो कविता पर हम बहुत पहिले एगो दोहागत आपन विचार देले रहीं -

दीआ से दीआ जरे, गीत रचावे गीत ।
साधू संगे साधु के, संगत जग के रीत ।।

एहन्याय से जीभ पर हमरो मन कुछ विचारे लागल आ कपिल जी के दोहा-डगर पर कदम रख देलस। बाकिर चलल आपन चाल से। कपिल जी के इंगित भाव लोक से फरका विचार संसार में। रचना सुनावल कविता लिखइवन के जानल-मानल कमजोरी हऽ। अब जीभ पर हमार रचना देखीं -

खूब चले ले जीभि ई पत्थर ना ई काठ ।
रिचा उचार रहे करे, ई हे स्वस्तिक - पाठ ।
रसना ना त रस कहाँ, ना बयना, ना बात ।
रसना के अनुरूप ही, गारि, प्रसंसा, लात ।
कतना कहीं आ का कहीं, ना बा बात ओरात ।
ई जिभिए नापत फिरे सभ जग के औकात ।।
आँखिन के भासा पढ़ीं, बूझीं मन के बात ।
जीभ बेचारी का कही, ओकर का औकात ।।

विश्वंभर नाथ पांडेय , लोहरदगा।

☆☆☆